International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 7, July- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

मछुआरा समुदाय और मछली पालन के व्यवसाय का समाजशास्त्रीय विश्लेषण

डॉ० कमलेश कुमार
एम० ए०, पी-एच० डी० (समाजशास्त्र),
तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

भूमिका : विश्व के सन्दर्भ में मत्स्य उत्पादन का मुख्यतः दो क्षेत्रों एक, समुद्री क्षेत्र (मेरीन फीसरी) तथा दूसरा इनलैंड क्षेत्र (देश के अंदर तालाब, पोखर, जलासय आदि में किये जाते हैं। मेरीन फीसरी तीन खंडों परम्परागत, आधुनिक एवं अत्याधुनिक तकनीक से किये जाते है। जबकि इनलैंड फीसरी में भी तीन खंड-कैप्चर, कैप्चर-कम-कल्चर तथा कल्चर फीसरी है। कैप्चर फीसरी मुख्यतः नदी के जल द्वारा किया जाता है। कैप्चर-कम-कल्चर फीसरी बड़े जलासयों एवं झील के जल में तथा 'कल्चर फीसरी' तालाब, पोखर, चौर आदि में उपलब्ध जलों में किये जाते हैं। मत्स्य उद्योग एक महत्त्वपूर्ण उद्योग के अंतर्गत आता है तथा इस उद्योग को प्रारंम्भ करने के लिए कम पूंजी की आवश्यकता होती है। इस कारण इस उद्योग को आसानी से षुरू किया जा सकता है। मत्स्य उद्योग के विकास से जहाँ एक ओर खाद्य समस्या में सुधार होती है, वही दूसरी ओर इससे आय में भी वृद्धि होती है। भारतीय अर्थव्यवस्था में मछली पालन एक महत्वपूर्ण व्यवसाय है, जिसमें रोजगार की अपार संभावनाएँ हैं। ग्रामीण विकास एवं अर्थव्यवस्था में मत्स्य पालन की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। मछली पालन के द्वारा रोजगार सृजन तथा आय में वृद्धि की अपार संभावनाएँ हैं, ग्रामीण पृष्ठभूमि से जुड़े हुए लोगों में आमतौर पर आर्थिक एवं सामाजिक रूप से पिछड़े अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति व अन्य कमजोर तबके के हैं जिनका जीवन स्तर मत्स्य व्यवसाय को बढ़ावा देने से उच्च स्तर सकता है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 7, July- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

मत्स्य उद्योग एक ऐसा उद्योग है जिसके साथ–साथ कम लागत पर अन्य उद्योगों को भी किए जा सकते हैं। मत्स्य पालन के साथ–साथ अन्य उत्पाद जीवों का पालन किया जा सकता है जिससे मत्स्य उत्पादन में होने वाले व्यय की पूर्ति की जा सके एवं अन्य जीवों से उत्सर्जित व्यर्थ पदार्थों का उपयोग मत्स्य पालन (भोजन) के लिए हो सके तथा अन्य जीवों के उत्पादन से अतिरिक्त आय प्राप्त हो सके। वर्तमान में मत्स्य पालन के साथ–सुअर, बत्तख एवं मुर्गी पालन करना काफी लाभप्रद साबित हुआ है। इन प्रयोगों से प्राप्त परिणाम आशाजनक तथा उत्साहवर्द्धक है।

मत्स्य पालन सह–सिंहाड़ा उत्पादन–

छोटे तालाब जिनकी गहराई एक–दो मीटर रहती है, जिनमें मत्स्य पालन किया जाता है उनमें सिंघाड़ा की उपज भी ली जा सकती है। सिंघाड़ा एक उत्तम खाद्य पदार्थ है। तालाब में सिंघाड़ा बरसात में लगाया जाता है एवं उपज अक्टूबर माह से जनवरी तक ली जा सकती है। सिंघाड़ा और मछली पालन से जहाँ मछलियों को भोजन प्राप्त होता, वहीं खाद्य का उपयोग सिंघाड़ा की वृद्धि में सहायक होता है। सिंघाड़ा की पत्तियाँ एव षाखाएँ जो समय–समय पर टूटती है, मछलियों के भोजन का काम करती है। ऐसे तालाबों में कालबसू और मिग्रल की बाढ़ अच्छी रहती है। पौधों के वे भाग जिन्हें मछलियाँ नहीं खाती है तालाब में खाद का काम करते हैं जिससे तालाब में प्लबक की बाढ़ अधिक होती है, जो मछलियों का भोजन है। भारत में मछली उत्पादन में लगातार वृद्धि हुई हैं जहाँ 2002–03 में समुद्री मछलियों एवं इनलैंड (नदी तालाब आदि) मछलियों का उत्पादन क्रमशः 29.90 लाख टन एवं 32.10 लाख टन तथा कुल उत्पादन 62.00 लाख टन था वहीं 2011–12 में कुल उत्पादन 73.55 लाख टन (समुद्री मछली 33.20 लाख टन एवं इनलैंड मत्स्य उत्पादन 40.35 लाख टन) हो गया है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 7, July- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

विश्व मत्स्य उत्पादन में भारत की भागीदारी में वृद्धि हुई है, लेकिन इसकी भागीदारी अब भी बहुत कम है। 2011–12 में समुद्री मत्स्य उत्पादन में भारत की भागीदारी 3.62 प्रतिशत तथा तालाब पोखर आदि (इनलैंड फीसरी) में 11.23 प्रतिशत भागीदारी थी। (स्रोतः हैंड बुक ऑफ फीसरीज स्टेटिसटिक 2013, कृषि मंत्रालय भारत सरकार)। जहाँ एक ओर भारत में मत्स्य उत्पादन का विश्व मत्स्य उत्पादन में एक महत्वपूर्ण स्थान है वही भारत के सामाजिक–आर्थिक विकास में भी इनकी भूमिका महत्वपूर्ण है। इसके तीन कारण है–(1) यह व्यवसाय 14.48 मीलियन लोगों के जीविका का मुख्य आधार है जो मुख्यतः सामाजिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़े एवं गरीब हैं। (2) मत्स्य उत्पादन के द्वारा कम कीमत पर पर्याप्त प्रोटीन प्राप्त किया जा सकता है; तथा (3) इसके निर्यात की भी संभावना अधिक है जिससे विदेशी मुद्रा प्राप्त की जा सकती है।

बिहार राज्य, विशेष रूप से उत्तर बिहार के विभिन्न जिलों में मत्स्य उत्पादन की क्षमता एवं मत्स्य उत्पादन के स्रोत बड़े पैमाने पर उपलब्ध हैं। वास्तव में, बिहार भारत के प्रमुख राज्यों में षामिल है जहाँ वृहत (इन्लैंड फीसरीज') एवं ('एक्वाक्लचर स्रोतों) की उपलब्धत है; लेकिन यहाँ मत्स्य उत्पादन की क्षमता में कमी पायी जाती है। फिर भी बिहार को अपने वार्षिक मत्स्य माँग की आधा पूर्ति आंध्रप्रदेश जैसे राज्य से करनी पड़ती है। दूसरी ओर 1970 तक बिहार अपने मत्स्य उत्पाद को अन्य पड़ोसी राज्यों में पूर्ति किया करता था, लेकिन आश्चर्यजनक रूप से अन्य राज्यों से बिहार में मत्स्य का आयात किया जाने लगा। अभी भी मत्स्य उत्पादन की क्षमता एवं स्रोतों की उपलब्धता के बावजूद यहाँ मछलियों की कमी है तथा यहाँ की मांग की पूर्ति हेतु अन्य राज्यों पर निर्भर होना पड़ता है।

बिहार में 27.3 हजार हेक्टेयर जलीय क्षेत्र है तथा यहाँ 3200 कि०मी० नदियों की लम्बाई है। यह क्षेत्र बिहार के पूरे भौगोलिक क्षेत्र का 3.9 प्रतिशत है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 7, July- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

बिहार की यह जलीय स्थिति यहाँ मत्स्य उत्पादन का एक वृहत् अवसर प्रदान करने के साथ-साथ मछुआरा समुदाय को लाभप्रद व्यवसाय उपलब्ध कराने का आधार भी प्रदान करता है। बिहार में मत्सय व्यवसाय में तेजी से वृद्धि हो रही है तथा राज्य की कुल जी०डी०पी० में इसका योगदान पिछले एक दशक में दो गुणा से भी अधिक हुआ है। बिहार में 2004-05 मत्स्य उत्पादन 2.67 लाख टन था जो 2014-15 में बढकर 4.79 लाख टन हो गया। (स्रोत-इकॉनोमिक सर्वे, बिहार, 2015-16 मत्स्य विभाग, बिहार सरकार)। बिहार में मत्स्य जल स्रोतों की उपलब्धता से यहाँ मत्स्य व्यवसाय की संभावनाओं का निर्माण हुआ तथा यहाँ की अर्थव्यवस्था में इसका बहुत महत्त्व है। यही कारण है कि यहाँ मछुआरों का एक बड़ा वर्ग विद्यमान है, क्योंकि मछुआरों की संख्या एवं उसका आकार उस क्षेत्र में मत्स्य व्यवसाय हेतु उपलब्ध जल संसाधनों पर निर्भर करता है। लईव स्टोक सेंसस, 2011 के अनुसार बिहार में मछुआरों की जनसंख्या लगभग 50.36 लाख है जो कि भारत के कुल मछुआरों का 34.56 प्रतिशत है। बिहार के मत्स्य रोजगार में पुरूष एवं महिलाओं के साथ-साथ मछुआरों के परिवार के बच्चे भी षामिल हैं। यहाँ कुल मछुआरों में 29.02 प्रतिशत, पुरूष, 24.78 प्रतिशत महिलाएँ एवं 46.20 प्रतिशत बच्चे षामिल हैं।

मत्स्य उत्पादन एवं व्यवसाय से मुख्यतः मछुआरा समुदाय के लोग जुड़े हुए हैं। यह समुदाय जाति आधारित समुदाय है जिनकी जातीय एवं व्यावसायिक सहभागिता मत्स्य व्यवसाय के साथ सम्पूर्ण भारतीय समाज में देखेने को मिलती है; यद्यपि इनके जाति के नाम में भिन्नता स्थानीय एवं प्रान्तीय स्तर पर अलग अलग है। बिहार में मछुआरा जाति में मुख्य हैं:- बनपर, गोढ़ी, बिन्द, चाँय, धीमर, निषाद, धीवर, गौंड, गोडिया, सहनी, गड़िया, राजगौंड, केवट, खरवार, खागी, कहार, कोल्हा, माँझी, मँझवार, सोरैहिया, तियार, मल्लाह आदि। यद्यपि भारत में मछुआरा समुदाय जाति आधारित है, लेकिन धार्मिक आधार पर इनमें हिन्दू के अतिरिक्त अन्य धर्म के

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 7, July- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

मछुआरे भी वर्गीकृत किये हैं। भारत में हिन्दू 74.1 प्रतिशत मछुआरों परिवार, 16.6 प्रतिशत इसाई परिवार तथा 9.2 प्रतिशत मुस्लिम परिवार है। केरल में मत्स्यजीवी समुदाय में ईसाई 42.04 प्रतिशत, हिन्दू 30.7 प्रतिशत तथा मुस्लिम 26.9 प्रतिशत है। ईसाई मछुआरों की प्रधानता गोवा (37.3 प्रतिशत) तथा तमिलनाडू (34.6प्रतिशत) राज्यों में है। (हैंडबुक ऑफ फीसरीज स्टेटिसटिक कृषि मंत्रालय, भारत सरकार 2014)

सामाजिक रूप से मछुआरा समुदाय का सम्बन्ध पिछड़ी जाति एवं दलित जाति समूहों से है। ऐसी स्थिति में इस समुदाय को भी उन सामाजिक समस्याओं जैसे अशिक्षा, अज्ञानता, अंधविश्वास, सामाजिक व्यवस्था में निम्न परिस्थिति, अलग टोलों, बस्तियों में निवास आदि का सामना करना पड़ता है जिन समस्याओं का सामना पिछड़ी एवं दलित जाति के लोग करते हैं। मछुआरा समुदाय का व्यवसाय मुख्यतः जाति आधारित रहा है तथा इस समुदाय के अधिकतर लोग इसी आधार पर परम्परागत रूप से मत्स्य व्यवसाय से जुड़े हुए हैं। इसके अतिरिक्त इसी संदर्भ में जाति आधारित इनके सामाजिक संगठन भी है तथा वे कुछ संगठित समितियों जैसे नाविक संघ, स्वयं सहायता समूहों, विभिन्न संघों आदि से भी जुड़ते हैं। इन संगठनों के प्रकार्यात्मक पक्ष उनके सामाजिक जीवन के साथ-साथ आर्थिक जीवन से भी संबंधित है।

आर्थिक रूप से मत्स्य व्यवसाय से एक बड़ी जनसंख्या जुड़ी हुई है। भारतीय लाईव स्टॉक सेंसस 2011, के अनुसार 14.79 मिलीयन लोग विभिन्न तरह के मत्स्य क्रियाकलापों से जुड़े हुए थे। इनमें करीब 75 प्रतिशत मत्स्य जीवी लोग 'इनलैंड फीसरीज से तथा लगभग 25 प्रतिशत लोग मेरीन फीसरी' में संलग्न हैं। भारतीय मत्स्य व्यवसाय क्षेत्र की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता इसका 'लघु-आकार' प्रकृति का होना है। भारत में मत्स्य व्यवसाय एक परम्परागत आर्थिक गतिविधि है जिसे

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 7, July- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

मछुआरा समुदाय के लोग एक पीढ़ी 1 से दूसरी पीढ़ी तक लेकर आते हैं। आर्थिक दृष्टिकोण से मछुआरों को तीन वर्गों (1) (इनलैंड फीसर, (2) मेरीन फीसर, तथा (3) फिश फार्मर में वर्गीकृत किया गया है। भारत में 50 प्रतिशत से अधिक मत्स्य का उत्पादन 'इनलैंड फिसरीज के माध्यम से होता है, जबकि बिहार में पूरी तरह से 'इनलैंड फीसरीज' ही की जाती है। भारत में 'इनलैंड फीसरीज' के जल स्त्रोंतों में मुख्यतः नदी एवं नहर (11,95,210 कि०मी०) बडे जलाशय (20.79मिलीयन हेक्टेयर) तालाब एवं पोखर (2.4मिलीयन हेक्टेयर), तथा व्रेकिस वाटर (बिखरे हए जल कुंड, 1.24 मिलीयन हेक्टेयर) उपलब्ध है। इनलैंड मत्स्य कुल उत्पाद में लगातार वृद्धि हुई। व्यापार संघ यह 1950–51 ई0 में 0.218 एम०टी० से 2006–07 में बढकर 3.84 एम० टी हो गया। यद्यपि इनलैंड फीसरीज के मत्स्य उत्पादन वृद्धि दर में कुल मत्स्य उत्पादन की तुलना में कमी हुंई है। इनलैंड फीसरीज में पुरूषों के अतिरिक्त महिलाओं (24.78 प्रतिशत) की भी बड़ी भागीदारी है। यद्यपि मत्स्य व्यवसाय से जुड़ी महिलाओं के स्वास्थ्य एवं पोषण की समस्याएँ अन्य गरीब महिलाओं की समस्याओं से अलग नहीं है।

मत्स्य व्यवसाय में मछुआरों सहयोग समिति की भी भूमिका महत्त्वपूर्ण है। इसके माध्यम से न केवल मत्स्य व्यवसाय का विकास होता है बल्कि यह मछुआरों के विकास में भी योगदान देता है। यह एक वैधानिकता है कि बिहार में जलकर मछुआरा सहयोग समितियों को किया जाएगा जिसका निबंधन बिहार सहयोग समिति अधिनियम 1935 अथवा सेल्फ रिलाएन्ट कॉपरेटिव सोसाइटी एक्ट, 1996 के तहत हुआ हो। इस समिति के सदस्य केवल मछुआरा समुदाय के ही लोग हो सकते हैं जो कि बिहार जलकर प्रबंधन एक्ट, 2006 के अंतर्गत एक कानून बन गया है।

निष्कर्ष : आधुनिक समय में मत्स्य व्यवसाय एक महत्त्वपूर्ण आर्थिक क्रिया बन चुकी है क्योंकि इससे न केवल ग्रामीण समुदाय के गरीब वर्ग की आय में वृद्धि होती है बल्कि

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 7, July- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

इससे अन्य कई सहायक उद्योगों की संभावनएँ भी बढ़ जाती है। मछुआरा समुदाय की सामाजिक–आर्थिक स्थिति को उपर उठाने हेतु मत्स्य उत्पादन एवं व्यवसाय में वृद्धि की आवश्यकता है। इसी दृष्टिकोण से मत्स्य व्यवसाय एवं मछुआरा समुदाय के उत्थान हेतु कई कार्यक्रम एवं योजनाओं का संचालन किया जा रहा है। इस संदर्भ में यह महत्त्वपूर्ण है कि भारत में पंचवर्षीय योजना की षुरूआत के बाद विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकारों के द्वारा मत्स्य व्यवसाय के विकास हेतु लागत में लगातार वृद्धि हुई है; यद्यपि कि विभिन्न योजनाओं में उस लागत का पूर्ण व्यय नहीं हो पाया।

सन्दर्भ–ग्रन्थ–सूची :

1. धवल पाण्डेय : रिजर्वायर फीसरीज इन गुजरात; आई० डब्ल्यु०एम० आई० टाटा वाटर पॉलिसी रिसर्च प्रोग्राम नई दिल्ली, 2004 पृष्ट–124
2. अमिता सक्सेना : दी सोसियो इंकोनॉमिक स्टेटस ऑफ फिसरमैन ऑफ डिस्ट्रीक्ट ऑफ रामपुर, उत्तरप्रदेश, प्रकाशित लेख, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ट्रेन्डस इन फिशरीज रिसर्च, डामा, वो० 3 इश्यू–3, 2014
3. नीरज कुमार गौतम : ''मछली पालन में रोजगार की संभावनाएँ'' प्रकाशित लेख कुरूक्षेत्र, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष–2011 पृष्ठ–26
4. पी० कुमार : ''स्टडी ऑन मॉडलिंग ऑफ हाउसहील्ड डिमान्ड फॉर फिश इन इंडिया'' इंडियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चर इकानॉमिक्स, खंड– 59, नं०–3, जुलाई सितम्बर, 2004
5. एस० बालासुब्रमन्यम : सोसियो–इकॉनोमिक वेरिएबुल्स ऑफ फीसरमैन इन हीराकुंड रिजर्वायर एण्ड देयर इंक्नोलॉजी ऍडोप्सन; पेपर प्रजेन्टड ड्यूरिंग दी नेट सीम ऑन रेबीराईन एण्ड रिजर्वायर फीसरीज–चैलैंज एण्ड स्ट्रेटेजीस, मई 23–24 कोचीन, 2001
6. पी० के० चौहान : सोसियो–इॅकॉनोमिक स्टेटस ऑफ फीसरमैन ऑफ पोंग रिजर्वायर, लेक रिजवार्यर मैनेजमेंट, 18(1):15–19, 2002